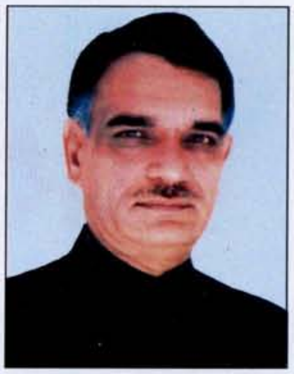

सत्यमेव जयते

शिवराज पाटील
SHIVRAJ V. PATIL
गृह मंत्री, भारत
HOME MINISTER, INDIA

प्रिय देशवासियों,

हिंदी दिवस के अवसर पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

भारत एक विशाल और बहुभाषा-भाषी देश है। यहां विभिन्न प्रांतों में अलग-अलग भाषाएं बोली जाती हैं। इसलिए अखिल भारतीय स्तर पर विचारों के आदान-प्रदान के लिए एक ऐसी भाषा की आवश्यकता महसूस की गई जिसे देश में सबसे अधिक लोग बोल सकते हों और समझ सकते हों। इसे ध्यान में रख कर और काफी चिंतन-मनन करने के उपरांत ही हमारे देश के संतों, मनीषियों और महापुरुषों ने सम्पर्क भाषा के रूप में हिंदी को अपनाया। सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली और समझी जाने वाली भाषा होने के कारण संविधान सभा के सदस्यों ने इसे राजभाषा के रूप में स्वीकार किया।

सांस्कृतिक सम्पदा, ऐतिहासिक धरोहर और बहुमूल्य परम्पराओं के रूप में विश्व में हमारी अपनी विशिष्ट पहचान है। यह विशिष्टता हमने अपनी-अपनी भाषाओं के माध्यम से ही अर्जित की है। पहले यह कार्य संस्कृत भाषा के द्वारा किया गया था और अब इसे हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाएं बखूबी निभा रही हैं। इसलिए हमारा यह प्रथम कर्त्तव्य बन जाता है कि हम अपनी भाषाओं को विज्ञान और तकनीकी की दृष्टि से और उन्नत बनाते हुए अपनी संस्कृति के उच्च आदर्शों को कायम रखें।

संस्कृति और सभ्यता की समृद्धि के लिए जरुरी है कि विश्व की विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध उच्च स्तरीय साहित्य का हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया जाए। साथ ही, आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की विभिन्न विधाओं पर उच्च कोटि का साहित्य मूल रूप से हिंदी और भारतीय भाषाओं में भी तैयार किया जाना चाहिए।

यद्यपि, इस कमी को पूरा करने के लिए भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों/विभागों द्वारा मौलिक पुस्तक लेखन योजनाएं चलाई जा रही हैं। इन योजनाओं के अंतर्गत सर्वश्रेष्ठ पुस्तकों को पुरस्कृत भी किया जाता है। लेकिन स्तरीय पुस्तकों की कमी अभी भी महसूस की जा रही है। हमारे देश में प्रतिभा की कोई कमी नहीं है। अतएव, उच्च स्तरीय सर्जनात्मक कार्य के लिए विषय-विशेषज्ञों, लेखकों, प्रकाशकों को आगे आना होगा।

हमें इस बात का भी ध्यान रखना होगा कि विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में हम जो भी नए कीर्तिमान बनाएं उसका लाभ आम जनता तक पहुंचे। इसके लिए यह आवश्यक है कि विज्ञान और तकनीकी साहित्य में सरल शब्दों और शैलियों का प्रयोग किया जाए जिससे कि वह आसानी से समझ में आ सके। यह कोई कठिन कार्य नहीं है क्योंकि विदेशी भाषाओं की तुलना में हमारी शब्द सम्पदा काफी समृद्ध है।

हमें अपनी भाषाओं को सूचना और प्रौद्योगिकी के साथ भी जोड़ना होगा। यह हमारे लिए परम आवश्यक है क्योंकि यदि हम ऐसा नहीं करेंगे तो हमारी भाषाओं का विकास रूक जाएगा। इसलिए हमें अपनी भाषाओं में काम करने के लिए आधुनिक तकनीकी से युक्त उन्नत सॉफ्टवेयर बनाने होंगे।

यह एक अच्छी बात है कि भारत सरकार का राजभाषा विभाग इस ओर सक्रिय रूप से कार्यरत है। विभाग द्वारा सी-डेक, पुणे के सहयोग से अंग्रेजी तथा विभिन्न भारतीय भाषाओं के माध्यम से प्रबोध, प्रवीण और प्राज्ञ स्तर की हिंदी सीखने के लिए लीला राजभाषा सॉफ्टवेयर, अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद हेतु मंत्र राजभाषा सॉफ्टवेयर, हिंदी स्पीच से हिंदी टेक्स्ट के लिए श्रुतलेखन राजभाषा सॉफ्टवेयर और अंग्रेजी डिक्टेशन को कम्प्यूटर द्वारा अनुवाद करके हिंदी टेक्स्ट प्राप्त करने के लिए वाचांतर सॉफ्टवेयर विकसित किए गए हैं। इसके अतिरिक्त विभाग द्वारा ऑनलाइन परीक्षा देने की व्यवस्था भी की जा रही है।

हमारे राष्ट्रीय नेतृत्व ने जो जिम्मेदारी हम पर सौंपी है उसे निभाने में राजभाषा हिंदी पूरी तरह सक्षम है। आइए, हम सब मिलकर यह सिद्ध करें कि राजभाषा हिंदी जन-जन की भाषा बनकर देश की प्रगति में अपना योगदान करे।

जय हिंद !
नई दिल्ली
14 सितम्बर, 2008

(शिवराज वि. पाटील)